अठारहवीं अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता

आयोजक : **अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास**

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

दूरभाष : 23212123, 23236728 ● ई-मेल : aban210@gmail.com. Website : www.anuvratnyas.org

सेवा में
प्राचार्य/प्राचार्या

प्रिय महोदय/महोदया,

यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि अठारहवीं अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन स्कूल के विद्यार्थियों के लिए निम्नलिखित चार वर्गों में किया जा रहा है :

1. एकल गायन	● **कनिष्ठ वर्ग**	**कक्षा आठवीं तक**
2. समूह गायन	● **कनिष्ठ वर्ग**	

1. एकल गायन	● **वरिष्ठ वर्ग**	**कक्षा नवीं से बारहवीं तक**
2. समूह गायन	● **वरिष्ठ वर्ग**	

इस प्रतियोगिता हेतु आठ चयनित नैतिक गीतों की सीडी आपको प्रेषित की जा रही है। आपकी सुविधा हेतु उन गीतों की लिपिबद्ध प्रति भी साथ में प्रेषित है। समूह गायन में न्यूनतम पांच एवं अधिकतम ग्यारह प्रतियोगी भाग ले सकते हैं।

हारमोनियम, तबला, ढोलक, सितार, बांसुरी में से किन्हीं तीन वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जा सकता है एवं इन वाद्य यंत्रों के साथ **तानपुरा, मंजीरा, मीराकस, खंजरी** का प्रयोग भी किया जा सकता है। राज्यस्तरीय व राष्ट्रीयस्तरीयण प्रतियोगिता में 2 या 3 अंतरे गवाये जा सकते हैं।

प्रतियोगिता तीन चरणों में आयोजित की जा रही है। प्रथम चरण में आपके क्षेत्र के किसी भी विद्यालय या सभागार में क्षेत्रीय स्तर की प्रतियोगिता होगी। तत्पश्चात् द्वितीय चरण में सभी क्षेत्रों के प्रथम स्थान प्राप्त विजेताओं के मध्य राज्य स्तरीय प्रतियोगिता किसी केन्द्रीय सभागार अथवा विद्यालय में आयोजित की जायेगी। तृतीय चरण में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के प्रथम स्थान प्राप्त विजेताओं के मध्य राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित की जायेगी।

सीडी में दी गई धुन के अतिरिक्त भी उन्हीं गीतों की स्वतंत्र धुन रचना की जा सकती है। गीत न्यास की बेवसाइट पर भी उपलब्ध हैं।

आप अपने विद्यालय के छात्रों के मध्य प्रतियोगिता आयोजित कर चयनित प्रतियोगियों के नाम विद्यालय के माध्यम से निम्नलिखित केन्द्र में **10 जुलाई, 2017** तक अवश्य जमा करवा दें-

केन्द्र

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002
फोन : (011) 23212123, 23236728

पुरस्कार

प्रत्येक क्षेत्र के श्रेष्ठ स्तरीय प्रतियोगियों में से दोनों वर्गों के तीन-तीन प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया जायेगा एवं कुछ प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जायेंगे। सभी अच्छे प्रतियोगियों को सहभागिता प्रमाण-पत्र दिया जायेगा। निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा। इस विषय में कोई पत्र व्यवहार नहीं किया जायेगा। आपके विद्यालय से अच्छी संख्या में विद्यार्थी भाग लें, इसी आशा के साथ।

सम्पतमल नाहाटा
प्रबंध न्यासी

विजयवर्धन डागा
राष्ट्रीय संयोजक

संलग्न : गीत प्रपत्र एवं सीडी

EIGHTEENTH ANUVRAT MORAL SINGING COMPETITION

ORGANISED BY : **AKHIL BHARATIYA ANUVRAT NYAS**

ANUVRAT BHAWAN, 210, DEENDAYAL UPADHYAYA MARG, NEW DELHI-110002

PH. : 23212123, 23236728 ● E-mail : aban210@gmail.com. Website : www.anuvratnyas.org

To
The Principal,

Dear Sir/Madam,

We are pleased to inform you that the Eighteenth Anuvrat Moral Singing Competition is being organised for school students under the following Four categories :

1. JUNIOR SOLO	:	Upto class VIII	
2. JUNIOR GROUP	:		

1. SENIOR SOLO	:	Class IX to XII	
2. SENIOR GROUP	:		

TERMS & CONDITIONS

A minimum of five and maximum of eleven students can participate in the group competition.

A CD with eight moral patriotic songs as well as a booklet containing the text of those songs is being issued to you for your convenience.

Only 3 instruments out of following can be used : **Harmonium, Tabla, Dholak, Sitar, Flute.** For side effects **Tanpura, Manjira, Meracus or Khanjari** may also be used alongwith the given instruments. 2 or 3 stanjas of a song will have to be sung in the state level and National Level Competitions.

The rhythm can also be self-composed for the songs recorded in the CD. Songs are also available in the website of nyas.

The competition is being organised in three phases :

In the first phase the competition will be held in a local school/auditorium at the district level. In the second phase, the holders of first position at the district level will be invited to compete in the state level competition at a centrally located venue. In the third phase the holders of first position at the state level will be invited to compete in the national level competition. You are requested to arrange intralevel competition and send the names of winning participants of your school to any one of the following centre by **10th July, 2017** through school.

CENTRE

AKHIL BHARATIYA ANUVRAT NYAS

ANUVRAT BHAWAN, 210, DEENDAYAL UPADHYAYA MARG, NEW DELHI-110002

PH. : 23212123, 23236728

PRIZES

There are 3 graded prizes—1st, 2nd and 3rd and some consolation prizes in each catagory in each zone. Each participant will be given a participation certificate. The decision of the judges wil be final and no queries will be entertained in this regard.

Looking forward to a very enthusiastic participation from your school.

Sampatmal Nahata
Managing Trustee

V.V. Daga
National Convener

Encl. : Leaflet & CD of Song

अठारहवीं अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता

आयोजक : **अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास**

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

दूरभाष : 23212123, 23236728, ई-मेल : aban210@gmail.com. Website : www.anuvratnyas.org

अणुव्रत गीतमाला

संयममय जीवन हो

संयममय जीवन हो,
नैतिकता की सुर-सरिता में जन-जन मन पावन हो। संयममय जीवन हो ॥

अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा,
वर्ण, जाति या संप्रदाय से मुक्त धर्म की भाषा,
छोटे - छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन हो। संयममय जीवन हो ॥

मैत्री - भाव हमारा सबसे प्रतिदिन बढ़ता जाए,
समता, सह-अस्तित्व, समन्वय-नीति सफलता पाए,
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित मात्र शुद्ध साधन हो। संयममय जीवन हो ॥

विद्यार्थी या शिक्षक हो मजदूर और व्यापारी,
नर हो नारी बने नीतिमय जीवनचर्या सारी,
कथनी - करनी की समानता में गतिशील चरण हो। संयममय जीवन हो ॥

प्रभु बन कर के ही हम प्रभु की पूजा कर सकते हैं,
प्रामाणिक बनकर ही संकट - सागर तर सकते हैं,
शौर्य - वीर्य - बलवती - अहिंसा ही जीवन-दर्शन हो। संयममय जीवन हो ॥

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा,
'तुलसी' अणुव्रत - सिंहनाद सारे जग में प्रसरेगा,
मानवीय आचार - संहिता में अर्पित तन - मन हो। संयममय जीवन हो ॥

जय ज्योतिर्मय चिन्मय

जय ज्योतिर्मय चिन्मय दीप जले।
जय अनुशासन अन्तर्मन से स्वर निकले।

निज पर शासन फिर अनुशासन हो यह शाश्वत वाणी,
जय शासन जय अनुशासन की धार बहे कल्याणी,
जन जागृति की सहनाणी, चिर संजोए मानस सपन फले।

अनुशासन है जटिल पहेली, आज समूचे जग में,
व्यक्ति समाज राष्ट्र सारे ही, उलझ रहे पग-पग में,
है अहं भरा रग-रग में, तम गहराता कैसे सूर्य तले।

आज अपेक्षा अपने से, अपना अनुशासन जागे,
ऐसी क्रांति घटित हो मानव, उच्छृंखलता त्यागे,
स्वर्णिम भविष्य है आगे, शम सम श्रम से जीवन क्रम बदले।

जिस विद्या से भारत ने आध्यात्मिक गौरव पाया,
अखिल विश्व का एकमात्र जो, पथदर्शक कहलाया,
पा अनुशासन की छाया, उसी दिशा में फिर युग-चरण चले।

उठ जाग रे मुसाफिर

उठ जाग रे मुसाफिर ! अब हो चला सवेरा,
पल पलक खोल प्यारे ! अब मिट गया अंधेरा।।

प्राची में पौ फटी है, पर फड़फड़ा पखेरू,
चहचाह कर रहे हैं, निशि भर यहां बसेरा।।

लाली लिए खड़ी है, ऊषा तुझे जगाने,
यह रंग है क्षणिक-सा, आखिर उठाउ डेरा।।

वे उड़ चले विहग-गण, निज लक्ष्य साधना में,
आंखों में तेरे अब भी, देती है नींद घेरा।।

साथी चले गये हैं, तू सो रहा अभी भी,
झट चेत चेत चेतन! घर में घुसा लुटेरा।।

सूरज चढ़ा है 'तुलसी' प्रतिबोध दे रहा है,
अणुव्रत का बांध संबल, गन्तव्य दूर तेरा।।

लक्ष्य है ऊंचा हमारा

लक्ष्य है ऊंचा हमारा, हम विजय संगान गाएं।
चीरकर कठिनाइयों को, दीप सम हम जगमगाएं।।

तेज सूरज-सा लिए हम,
शुभ्रता शशि-सी लिए हम,
पवन-सा गति वेग लेकर, चरण ये आगे बढ़ाएं।।

हम न रुकना जानते हैं,
हम ना झुकना जानते हैं,
हो प्रबल संकल्प इतना, सफल हो सब कल्पनाएं।।

हम अभय, निर्मल, निरामय,
हैं अटल जैसे हिमालय,
हर कठिन जीवन घड़ी में, फूल बनकर मुस्कुराएं।।

हे प्रभो! पा पंथ तेरा,
हो रहा अब नव सवेरा,
स्वस्थ तन-मन, स्वस्थ चिंतन, चेतना की लौ जलाएं।।

अठारहवीं अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता

आयोजक : **अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास**

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

दूरभाष : 23212123, 23236728, ई-मेल : aban210@gmail.com. Website : www.anuvratnyas.org

अणुव्रत गीतमाला

जिसका जीवन सद्गुण का

जिसका जीवन सद्गुण का भण्डार है।
महापुरुष कहलाने का उस मानव को अधिकार है।।

प्राणों की बलि देकर भी जो सत्य-सुरक्षा करता है।
संघर्षों के तूफानों से नहीं कभी जो डरता है।
परम तत्व से जिस नरवर का प्यार है।।

औरों को पीड़ित करना निज को पीड़ित करना माने।
समदर्शी बन हर प्राणी को आत्मतुल्य जो पहचाने।
अनुकम्पा नर जीवन का श्रृंगार है।।

निश्छलतामय भावों से जो सबके साथ करे व्यवहार।
जग की माया-ममता तजकर निर्मल जो रखता आचार।
ऋजुता से खुलता प्रभुता का द्वार है।।

सुख-दुःख की घटनाओं में जो नहीं संतुलन को खोता।
प्रतिपल शुभ योगों के द्वारा पाप-पंक को जो धोता।
नमन हमारा उसको बारम्बार है।।

प्रभुवर हमको दो आशीर्वर

प्रभुवर! हमको दो आशीर्वर, पाएं लक्ष्य महान।
गाएं गीत विजय के हर दिन, राहें हों आसान।

गहरी निष्ठा सच्चरित्र में वर जीवनशैली
फूंक फूंक कर कदम रखें क्यों हो चादर मैली
रहे गूंजता सांस सांस में नैतिकता का गान।

सत्य अहिंसा सदाचार की महिमा महकाएं
नशा नाश का खुला द्वार है समझें समझाएं
अपनाकर अणुव्रत नियमों को स्वस्थ बने इंसान।

आपस में सद्भाव बहाएं मैत्री की धारा
जात पात के भेदभाव से पाएं छुटकारा
बने नहीं विभ्रान्त कभी हमें दो ऐसा वरदान।

उपशम की नित करें साधना क्रोध नहीं आए
सुख देता सन्तोष निरन्तर लोभ दूर जाये
वर्धमान हो विनयशीलता छू न सके अभिमान

शरणागत हम नाथ! तुम्हारे तुम सबके भ्राता
दूर करो अज्ञान-तिमिर को, तुम्हीं बोध दाता
गांव-गांव घर-घर पहुंचाएं अणुव्रत का आह्वान।

सच्चे मनुज बनो

सच्चे मनुज बनो, नीति सूत्र को धार
बदलो निज व्यवहार।

शिक्षा में नैतिकता आये, अनुशासित जीवन बन जाये।
विनयशील बन विद्या पाये, रहे न तनिक विकार।।

संयम की सौरभ महकाये, सद्गुण जीवन में अपनायें।
दुर्गुण को हम दूर हटाएं, मन से हो इकरार।।

समय कीमती नहीं गंवाये, बीता अवसर लौट न आये।
नहीं लक्ष्य को कभी भुलायें, फैले सुयश अपार।।

व्यसनमुक्त होकर जीवन में, रमण करें शिक्षण उपवन में।
सफल बनेंगे विद्वत गण में, सपने हो साकार।।

अणुव्रत को फैलायें हम

अणुव्रत को फैलायें हम,
जन जन के मन में अणुव्रत का दीप जलाएं हम।

सत्य अहिंसा के खंभो पर अणुव्रत टिका हुआ है,
मैत्री भाव समन्वय नीति खुद में लिए हुआ है,
ऐसे अणुव्रत से जीवन में ज्योति जगाएं हम॥

बूंद बूंद भरते रहने से ही घट भर जाता है,
अणु से अणु बढ़ते रहने से ही पथ मिल जाता है,
इसी भावना से अणुव्रत को पूर्ण बनाए हम॥

स्वस्थ समाज सुखी परिवार योजना की यह रेखा,
शोषण मुक्त समाज बने यही है अणुव्रत का लेखा,
घर-घर में अणुव्रत का शुद्ध समीर बहाएं हम॥

सुधरें खुद समाज सुधरेगा, अणुव्रत यह कहता है,
सब धर्मों का सार समन्वय का दरिया बहता है,
इस दरिये में नहा-नहा पावन बन जाएं हम॥